[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3479

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शास्त्रीय नृत्यों में नवीन प्रयोग

डॉ. मोनिका श्रीवास्तव
प्राध्यापक कथक नृत्य
कथक विद्या निकेतन मुरार, ग्वालियर

परमात्मा से एकाकार होने की भावना ही शास्त्रीय नृत्यों की रचनात्मकता है। वह भावना की अभिव्यक्ति है, लेकिन भावना है– शाश्वत की, शाश्वत मूल्यों की, सत्यम् शिवम् और सौन्दर्य की। सत्य, शिव की शाश्वत् अनुभूति से सौन्दर्य का जन्म होता है। शरीर व मन, सौन्दर्य की डोर से बँधता है और यह डोर कला के सौन्दर्य से निर्मित होती है। **सुष्टु नरः** अर्थात् **सुनरः** से सुन्दर बना। इसके साथ उदात्त, सौम्य, मनोहर, रमणीय, चारू, शोभन, रूचिर व शुभ के भाव जुड़े। सौन्दर्य एक विशुद्ध रूप है। यह अवधारणा भारतीय सौन्दर्यशास्त्रियों का विधान है एवं पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्री इसके स्वरूप की इस प्रकार व्याख्या करते हैं– ''सौन्दर्यशास्त्र के सच्चे स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिए ''एस्थेटिक्स'' शब्द पर ही विचार करना आवश्यक है। ''कलात्मक सौन्दर्य में आनन्द की अनुभूति होना आवश्यक है कलाकृति को देखते समय दर्शक को रूप संयोजन में आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए।

शास्त्रीय नृत्यों में नवीन प्रयोग सौन्दर्य अनुभूति व सृजन को ध्यान में रखकर करना चाहिए। सौन्दर्यानुभूति जब सृजन की ओर सक्रिय एवं अग्रसर होती है। तब कला की अनुभूति होती है। इस कला के द्वारा जो आनन्द प्राप्त होता है। उस आनन्द की विवेचना करने वाले शास्त्र को सौन्दर्य कहा गया है। सौन्दर्य काव्य एवं ललित कलाओं का प्रधान तत्व है। शास्त्रीय नृत्यों में नवीन प्रयोग, सौन्दर्य के तत्व सौन्दर्यशास्त्र के तत्व से समानता रखते है। तथा उसके मतों का समर्थन करते है।

सामान्य तत्व :–

सुसंगठन :– शास्त्रीय नृत्यों में संगठन के स्वरूप को देखा जा सकता है। कथक की प्रस्तुति में जब नर्तक वंदना, थाठ, तोड़े टुकड़े, परन और कवित्त गत भाव, ठुमरी या अन्य काव्य पक्ष में भाव की प्रस्तुति देता है तो इसमें अर्थपूर्ण अभिव्यक्तियाँ होती हैं। जो चपलता, स्फूर्तिपूर्ण शारीरिक संचालन के साथ–साथ मानसिक व बौद्धिक सृजनता का द्योतक होता है। सुसंगठन का तात्पर्य कथक में अंगविन्यास, पद संचालन, मुद्राओं का संगठन रस–भाव, अभिनय, लय व ताल का आपस में समन्वय होता है। शास्त्रीय नृत्यों में कला का यही विशेष क्रम या व्यवस्था ही सुसंगठन है। इसमें अर्थपूर्ण रोचकता का विशेष महत्त्व होता है।

सौन्दर्य :– शास्त्रीय नृत्यों के विभिन्न अंग हैं जो शास्त्र सम्मत गुणों से प्रतिष्ठित है। शास्त्रीय नृत्यों में सौन्दर्य अंग जैसे– नृत्त पक्ष के अंतर्गत अर्थहीन बोल, अर्थहीन मुद्राओं के साथ, ग्रीवा, दृष्टि, शिरोभेद का संतुलन व गणितीय रूप रेखा में संयोजन होता है। बुद्धि, चातुर्य, तन–मन की एकाग्रता, तन्मयता और सजगता के साथ असीम आनन्द व शान्तिदायक सौन्दर्य की प्रस्तुति करता है। नृत्य पक्ष में दृश्य श्रव्य, लौकिक, अलौकिक,मूर्त, अमूर्त सभी सौन्दर्य के अनेक सौन्दर्यमयी पहलुओं को संजोया है। शास्त्रीय नृत्यों की वेशभूषा, अंकरण रूपसज्जा आदि में बाह्य सौन्दर्य भी झलकता है। इनमें नवीन प्रयोगों की संभावनाएँ बढ़ जाती है।

संतुलन :– शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोग संतुलन निर्णयात्मक परख का प्रतीक है तथा शास्त्रीय नृत्यों में ताल पक्ष, लय गति और भाव पक्ष को समान महत्त्व देकर संतुलन स्थापित किया जाता है। शास्त्रीय नृत्यों का शास्त्रीय निरूपण नृत्त एवं नृत्य दो अंगों में विभाजित मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं एवं गणितीय व्याकरणीय सिद्धान्तों पर आधारित है। यह आंगिक, वाचिक, सात्विक एवं आहार्य अभिनय के संतुलन की शास्त्रबद्ध कला है।

विविधता :– विविधता का सौन्दर्य जितना कथक नृत्य में है उतना किसी और नृत्य में नहीं है। कथक नृत्य का प्राचीन स्वरूप समसामयिक स्वरूप में सृजनात्मक क्षमता का विकास हुआ है। पहले कथक नृत्य भक्ति, दर्शन, धर्म और अध्यात्म आदि से पहचाना जाता था, परन्तु मुगलकालीन परम्परा में गज़ल, ठुमरी, काव्य, बन्दिशों, तराने आदि का समावेश हुआ, जिसका प्रस्तार कथक नृत्य के चारों घरानों पर परिलक्षित होता है। इस तरह कथक में विविधता का सौन्दर्य चरमसीमा पर रहा। सभी कालों में कथक में नवीन प्रयोग, परम्परा और सम्भावनाओं का विकास हुआ। सूरदास, तुलसीदास, स्वामी हरिदास आदि प्रमुख कवियों के पदों पर कथक नृत्य के भाव पक्ष का रचनात्मक प्रयोग किया गया। सभी घरानों के गुरूओं एवं महाराजों ने कथक

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नृत्य का विकास किया तथा उसमें सौन्दर्य विविधता के नए आयामों को दिशा दी। कथक के नृत्त पक्ष में बोल बन्दिशों में प्रकृति प्रदत्त रचनाओं जैसे दलबादल, कड़क बिजली, मतस्य रंगावली, वर्षा, ऋतुएँ आदि बोल संरचनाओं का प्रयोग किया जाने लगा है, जो रायगढ़ नृत्य शैली की प्रमुख विशेषताओं में से है। इसी प्रकार लखनऊ, बनारस एवं जयपुर घरानों में भी सौन्दर्य व लालित्य की ओर झुकाव के कारण, गति, मुद्रा, अंग, बोल, बन्दिशों की संरचना, काव्य पक्ष, ताल, लय आदि में विविधता का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

चिरनवीनता :– शास्त्रीय नृत्यों के सौन्दर्य मे चिरनवीनता का बोध स्वीकार्य है। शास्त्रीय नृत्यों की नींव यूँ तो प्राचीन कथा, काव्य व प्रसंगों पर निहित होती है। परन्तु शास्त्रीय नृत्यों की अभिव्यंजना उनकी प्रस्तुति के नए–नए सौन्दर्यबोध, आंगिक व सात्त्विक अभिव्यक्तियां जितना नवीनता को बल दिया गया उतना शायद ही किसी अन्य कलाओं में दिया गया है। शास्त्रीय नृत्यों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से ही चिरनवीनता का बोध दिखाई देता है। इसका प्रमुख कारण सृजनता तो है ही गुरूओं का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है। जिन्होंने शास्त्रीय नृत्यों के आंगिक विन्यास, भावपक्ष व सम्पूर्ण प्रस्तुति में सौन्दर्यबोध को उजागर करने का प्रयास किया है।

संदर्भ –

1 *कथक अक्षरों की आरसी – डॉ. ज्योति बख्शी पृ. क्र. – 19 पैरा 2*
2 *कला के सौन्दर्य सिद्धान्त – डॉ. मोहण सिंह मावड़ी, पृ. क्र. – 15*